पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.03.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : **9810117464, 9868051444**

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-19 फाल्गुन-2081 दयानन्दाब्द 201 01 मार्च से 15 मार्च 2025 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.03.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

201वाँ महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

स्वामी दयानंद की शिक्षा मार्गदर्शक का कार्य करेगी –राजकुमार भाटिया (प्रदेश उपाध्यक्ष भाजपा)

धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण हो जाता है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 23 फरवरी 2025,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में भाजपा कार्यालय 14 पंत मार्ग,नई दिल्ली में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 201 वाँ जन्मोत्सव भव्य समारोह के रूप में आयोजित किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने यज्ञ करवा कर किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने अपने सन्देश में कहा कि महर्षि दयानन्द जी के आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं उनको जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण हो जाता है व्यक्ति की सोच व निष्ठा बदल जाती हैं।आर्य युवक परिषद् युवा पीढ़ी में संस्कार व देश भक्ति की भावना भरने का काम करता रहेगा। मुख्य अतिथि विधायक राजकुमार भाटिया (प्रदेश उपाध्यक्ष भाजपा) ने स्वामी दयानंद की जयंती पर विचार रखते हुए कहा कि इस विभूति ने 201 साल पहले जन्म लेकर भारत का मार्गदर्शन किया था।उन्होंने आगे कहा यदि वैदिक विचारधारा हमारे जीवन में आ जाये तो हम एक आदर्श जीवन जी सकते हैं।मुख्य अतिथि विधायक राजकुमार भाटिया (प्रदेश उपाध्यक्ष भाजपा) ने स्वामी दयानंद की जयंती पर विचार रखते हुए कहा कि इस विभूति ने 201 साल पहले जन्म लेकर भारत का मार्गदर्शन किया था।उन्होंने आगे कहा यदि वैदिक विचारधारा हमारे जीवन में आ जाये तो हम एक आदर्श जीवन जी सकते हैं। स्वामी दयानंद की शिक्षा आने वाली पीढियां के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी। वैदिक विद्वान आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने स्वामी दयानंद के अनगिनत उपकारों की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि नारी का उद्धार स्वामी दयानन्द कि देन है।आर्य समाज को चाहिए कि वह अपने आचरण और व्यवहार से वह स्थान बनाएं कि भारत पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन हो। इस अवसर पर कार्यक्रम अध्यक्ष भाजपा नेता यश पाल आर्य व पूर्व महापौर सुभाष आर्य ने भी अपने विचार रखे। प्रवीण आर्य पिंकी, प्रवीण आर्य एवं ओम सपरा ने मधुर भजन सुनाए। प्रमुख रूप से आर्य नेता महेंद्र भाई, दुर्गेश आर्य,धर्मपाल आर्य, मनोज मान, रामकुमार आर्य, सुरेश आर्य, प्रकाश वीर शास्त्री, डा प्रमोद सक्सेना, सुभाष शर्मा, चौधरी मंगल सिंह, डालेश त्यागी आदि उपस्थित थे।

रोहतक चलो..... रोहतक चलो..... रोहतक चलो.....

स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में

अंतरराष्ट्रीय आर्य विद्वत महा सम्मेलन

शुक्रवार, शनिवार, रविवार दिनांक 7,8,9 मार्च 2025

स्थानः स्वामी इन्द्रवेश विद्या पीठ, ग्राम–टिटोली, रोहतक, हरियाणा

हज़ारों की संख्या में पहुंचे

–स्वामी आदित्यवेश, संयोजक

शिवरात्रि पर ऋषि को हुए बोध ने वेदोद्धार एवं अविद्या को दूर किया

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द ने देश–विदेश को एक नियम दिया है 'अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिये'। इस नियम को संसार के सभी वैज्ञानिक एवं सभी विद्वान मानते हैं। आर्यसमाज में सभी विद्वान अनुभव करते हैं कि देश में प्रचलित सभी मत–मतान्तर इस नियम का पालन करते हुए दिखाई नहीं देते। इसी कारण से ऋषि दयानन्द को मत–मतान्तरों की अविद्यायुक्त मान्यताओं, सिद्धान्तों व परम्पराओं सहित सभी अन्धविश्वासों, पाखण्डों एवं आडम्बरों की समीक्षा करने सहित उनका खण्डन करना पड़ा। ऋषि के इन कार्यों का उद्देश्य विश्व के सभी मनुष्यों व भावी सन्ततियों का कल्याण करना था। ऋषि दयानन्द जी को इस कार्य की प्रेरणा अपने विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से सन् 1863 में गुरु–दक्षिणा के अवसर पर उनसे विदा लेते समय मिली थी। इस कार्य को उन्होंने वेद प्रचार का नाम दिया। वेद प्रचार का अर्थ सत्य, न्याय तथा विद्यायुक्त मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार करना है। ऋषि दयानन्द के समय में संसार के लोग वेद व उसके महत्व को भूल चुके थे। ऋषि ने अपने गुरु के सान्निध्य में वेदों का महत्व जाना था और वेदों को प्राप्त कर उनकी परीक्षा करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और इसकी सभी बातें सत्य व स्वतः प्रमाण कोटि की है। वेद ही मनुष्य जाति का सर्वविध व सर्वांगीण कल्याण करने वाला दिव्य व अलौकिक ज्ञान भी है। सूर्य के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, वह अपना प्रमाण स्वयं उदय होकर अपने प्रकाश व उष्णता से देता है। जिसको सूर्य का प्रमाण चाहिये उसकी आंख व त्वचा इन्द्रिय ठीक होनी चाहिये जिससे वह वस्तुओं को देख सकता व उनका अनुभव कर सकता हो। मनुष्य अपनी आंखों से सूर्य को देख कर उसका प्रत्यक्ष अनुभव व ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने एवं संसार के नियम व व्यवस्थायें वेदों के अनुरुप होने पर सत्य व यथार्थ ज्ञान सिद्ध होती हैं। वेदों में ईश्वर, जीव व प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। वेद अपनी इस महत्ता के कारण स्वतः प्रमाण है। वेदों से इतर अन्य ऋषियों, विद्वानों तथा आचार्यों द्वारा कही बातें वेद के अनुकूल होने पर ही प्रामाणित व स्वीकार करने योग्य होती हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदज्ञान की परीक्षा कर ज्ञान के सत्यासत्य होने की कसौटी 'वेद स्वतः प्रमाण एवं अन्य ग्रन्थ परतः प्रमाण' को प्रस्तुत कर मनुष्य जाति पर महान उपकार किया है। यह उनकी एक महत्वपूर्ण देन है जिससे समस्त मनुष्य जाति सृष्टि के अन्तिम समय तक ईश्वर, जीवात्मा, सामाजिक परम्पराओं एवं सभी विषयों के ज्ञान सहित ईश्वर की उपासना आदि का सत्य ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित होती रहेंगी। आश्चर्य एवं दुःख की बात है कि अज्ञान व किन्हीं अन्य कारणों से विश्व ने वेदों के महत्व व इनकी उपादेयता को उनके यथार्थ स्वरूप में अब तक स्वीकार नहीं किया है। हम विचार करते हैं तो हमें ईश्वर व उसका ज्ञान वेद मनुष्य जाति का सर्वस्व एवं प्राणों के समान महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं जिससे मनुष्य जीवन सुगमता से व्यतीत करते हुए परजन्म में भी उन्नति को प्राप्त किया जा सकता है। सम्पूर्ण मनुष्य जाति का कर्तव्य है कि वह वेदों की रक्षा करे और वेदाध्ययन कर अपने जीवन को उसके अनुकूल बनाकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करने में भी सफल होंवे।

ऋषि दयानन्द का जन्म गुजरात राज्य के मौरवी जिले के टंकारा नामक ग्राम में फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी, वि. सम्वत् 1881 (12–2–1825) को एक औदीच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आयु के चौदहवें वर्ष में उन्होंने शिवरात्रि का व्रत किया था। पिता के साथ रात्रि जागरण करते हुए उन्होंने चूहों को शिवलिंग पर बिना किसी रोकटोक क्रीड़ा करते देखा था। इससे उन्हें बोध हुआ था कि वह मूर्ति सर्वशक्तिमान सच्चे शिव की मूर्ति नहीं है क्योंकि इसमें चूहों को अपने ऊपर से हटाने की शक्ति नहीं थी। बालक मूलशंकर (भावी ऋषि दयानन्द) के पिता व अन्य विद्वतजन भी उनकी शंका का समाधान नहीं कर सके थे। इस घटना के बाद से मूलशंकर ने मूर्तिपूजा करना छोड़ दिया था। कालान्तर में उनकी बहिन व चाचा की मृत्यु हुई। इस घटना ने उनके मन में मृत्यु का भय उत्पन्न किया। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी मृत्यु का अनुमान कर डरे होंगे। मृत्यु की ओषधि है या नहीं, इसका समाधान उन्हें अपने परिवारजनों व आचार्यों से नहीं मिला। अतः सच्चे ईश्वर व उसकी प्राप्ति के उपायों सहित मृत्यु पर विजय प्राप्ति के साधनों की खोज में वह अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में घर छोड़कर चले गये। उन्होंने देश के प्रायः सभी प्रमुख तीर्थ स्थानों में जाकर वहां विद्वान संन्यासियों व महात्माओं का सान्निध्य प्राप्त किया और उनसे अपनी शंकाओं के समाधान जानने का प्रयत्न किया। उन्हें किसी से भी अपने प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। ऐसा करते हुए उन्होंने योग के आचार्यों से योग विद्या सीखी और उसमें निपुण हो गये। देश की दुर्दशा से वह चिन्तित रहते थे। उनकी यह पीड़ा उनके ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से भी प्रकट होती है।

योग में समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेने पर भी ऋषि दयानन्द अपनी ज्ञान की पिपासा को सन्तुष्ट नहीं कर पाये। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी की संगति से उन्हें उनके शिष्य मथुरा के प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती का परिचय मिला था जो वेद व आर्ष–ज्ञान के आचार्य थे। दण्डीजी मथुरा में अपनी पाठशाला में विद्यार्थियों को वेदांग व्याकरण अष्टाध्यायी–महाभाष्य पढ़ाते थे। स्वामी दयानन्द सन् 1860 में उनके पास पहुंचे और लगभग 3 वर्ष तक उनके सान्निध्य में रहकर वेद–वेदांगों का अध्ययन किया। तीन वर्षों में यह अध्ययन पूरा हुआ। सन् 1863 में गुरु दक्षिणा के अवसर पर गुरु विरजानन्द ने उनसे संसार से अविद्या वा अज्ञान दूर कर सत्य आर्ष ज्ञान को प्रचारित कर अनार्ष ज्ञान को हटाने की प्रेरणा की। ऋषि दयानन्द ने अपने गुरु की इस प्रेरणा को स्वीकार कर उसे शिरोधार्य किया था और आजीवन इसका पालन किया। इसके बाद से ही उन्होंने धर्म प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया था। उन्होंने अपने प्रयत्नों से वेदों की खोज कर उन्हें प्राप्त किया, उनका गहन अध्ययन एवं परीक्षा की और उसके बाद अपने वेद विषयक सिद्धान्तों का निश्चय कर वह देश भर में सत्य वेदज्ञान के प्रचार के कार्य में संलग्न हो गये। वेद प्रचार ही वह कार्य है जिससे देश देशान्तर में अविद्या को दूर किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द को वेद प्रचार का कार्य करते हुए सफलता मिलनी आरम्भ हो गई थी। इसका एक उदाहरण 16 नवम्बर, सन् 1869 को विद्या की नगरी काशी में उनका लगभग 30 सनातनी विद्वानों से मूर्तिपूजा की वेदमूलकता पर शास्त्रार्थ हुआ जिसमें उन्हें मूर्तिपूजा को वेदविरुद्ध सिद्ध करने में सफलता मिली। इससे उन्हें पूरे विश्व में यश प्राप्त हुआ था।

ऋषि दयानन्द का जन्म ऋषियों की भूमि भारत में हुआ था। उनका कर्तव्य था कि वह प्रथम भारत में विद्यमान अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं सामाजिक विषमताओं को दूर करें। उन्होंने इस कार्य को अपनी पूरी योग्यता व क्षमता से किया। इसका अनुकूल प्रभाव हुआ जो आज भी दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत की पराधीनता समाप्त हुई। ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों, धर्मप्रचार, शास्त्रार्थ, शुद्धि आदि को कार्यों न मानने का परिणाम ही देश का विभाजन होना था। ईश्वर, जीवात्मा और संसार का सत्यस्वरूप आज हमारे सामने है। हम ईश्वर की उपासना विधि सहित वायु एवं जल आदि की शुद्धि द्वारा मनुष्यों को रोगों से दूर रखने तथा रोगी को स्वस्थ करने का उपाय अग्निहोत्र यज्ञ को भी जानते व करते हैं। हम यह भी जान पाये हैं कि हमारे रोगों का कारण हमारी अनियमित दिनचर्या सहित अनयिमित भोजन एवं वायु, जल एवं पर्यावरण की अशुद्धि व प्रदुषण होता है। शिक्षा व विद्या का महत्व भी देशवासियों ने समझा और आज भारत विद्या के क्षेत्र में विश्व के अग्रणीय देशों में है। ऋषि दयानन्द ने शुद्ध भूमि में परम्परागत देशी खाद व उत्तम नस्ल के बीजों से उत्पन्न खाद्यान्न को मनुष्य के लिए हितकर व स्वास्थ्यवर्धक बताया था। वर्तमान में इस बात की भी पुष्टि हो रही है। ऋषि दयानन्द ने स्वास्थ्य का आधार ब्रह्मचर्य को बताया था यह भी अब सभी स्वीकार करने लगे हैं। ब्रह्मचर्य का सेवन छूट जाने को ही उन्होंने देश व समाज के पतन का प्रमुख कारण भी बताया था। इसे भी विद्वानों ने ज्ञान के स्तर पर सत्य सिद्ध किया है। ऋषि दयानन्द ने मांसाहार, अण्डा, मछली, मदिरा को निन्दित भोजन बताया था। आज हमारे चिकित्सक हृदय व मधुमेह आदि अनेक रोगों में इन पदार्थों का सेवन न करने की सलाह देते हैं। धार्मिक दृष्टि से भी इन पदार्थों का सेवन अत्यन्त निन्दनीय होने सहित आयु ह्रास का कारण है। इससे परजन्म में भी अतीव हानि होती है।

ऋषि दयानन्द ने महाभारत युद्ध के बाद मध्यकाल में सनातन वैदिक धर्म में प्रविष्ट मूर्तिपूजा व जड़पूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, सामाजिक असमानता व भेदभाव आदि का भी खण्डन व विरोध किया था। उन्होंने अपने ग्रन्थों में इनके सम्बन्ध में विस्तार से प्रकाश डाला है। आज तक किसी मत–मतान्तर के विद्वान व आचार्य ऋषि दयानन्द द्वारा खण्डित इन मान्यताओं व विचारों को वेदानुकूल अथवा मनुष्य जाति के लिए हितकर व लाभप्रद सिद्ध नहीं कर सके। ऋषि दयानन्द ने सत्य के प्रचार के लिये सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद–यजुर्वेद भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया। उन्होंने वेदों का अध्ययन करने के लिये संस्कृत के अनेक व्याकरण ग्रन्थों की रचना भी की। अपने समय में ऋषि दयानन्द ने अपनी मान्यताओं के समर्थन में विपक्षी विद्वानों से शास्त्रार्थ, वार्तालाप व शंका समाधान आदि भी किये। उनके अनुयायी विद्वानों ने उनके खोजपूर्ण विस्तृत जीवन चरित्र लिखे। यह सब ऋषि दयानन्द को संसार का महानतम पुरुष सिद्ध करते हैं जो दृण ईश्वर विश्वासी हैं, अद्भुद ज्ञानी हैं, तपस्वी व पुरुषार्थी हैं, तर्क शक्ति से सम्पन्न हैं, किसी भी विवादित विषय पर चर्चा करने पर अपराजेय हैं, एक साधारण नाई की सूखी रोटी स्वीकार कर उसे भी प्रेम

(शेष पृष्ठ 3 पर)

नवदम्पति को आशीर्वाद

परिषद के कर्मठ मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य की सुपुत्री प्रिया का शुभ विवाह डॉ. रणजीत से सम्पन्न हुआ। नवदंपति को सुखी दाम्पत्य जीवन की शुभकामनाएं। द्वितीय चित्र–श्री सुशील आर्य की सुपुत्री आयु. प्राची व मोहित के विवाह समारोह में सुशील आर्य के साथ धर्मपाल आर्य व दुर्गेश आर्य। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य व पिंकी आर्या ने दोनों जगह पहुंच कर आशीर्वाद दिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 702वां वेबिनार सम्पन्न

चुनौतियो पर चिंतन विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

बदलते परिवेश में कार्य शैली बदलनी होगी –आर्य रविदेव गुप्त

सोमवार 24 फरवरी 2025, **केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'ऋषि बोध दिवस' के उपलक्ष्य में ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।** कोरोना काल से यह 702 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता आर्य रविदेव गुप्त ने कहा कि बदलते परिवेश में हमे अपनी कार्य शैली बदलनी होगी।उन्होंने कहा कि किसी भी अच्छे उदेश्य के लिए कार्य में रूकावटे तो आती ही है।उदेश्य और संकल्प मज़बूत हों तो चुनौतीयों को अवसर में बदला जा सकता है।वैदिक वांग्मय में ऐसे उदेश्य को शिव संकल्प कहा गया है।ऐसे ही मूल शंकर शिव संकल्प के लिए महर्षि दयानन्द बन गए।आइये उनके बोध दिवस पर कुछ शिव संकल्प लेने का हम भी संकल्प लें। कार्यक्रम का कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया और प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, मृदुल अग्रवाल, ललिता धवन, नरेंद्र आर्य सुमन, महेन्द्र भाई, सुधीर बंसल आदि के मधुर भजन हुए।

'योगी नहीं तुमसा' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

स्वामी दयानन्द का जीवन प्रेरक रहा –आचार्या विमलेश बंसल

मंगलवार, 17 फरवरी 2025, **केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'योगी नहीं तुमसा' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 701 वाँ वेबिनार था।** वैदिक विदुषी आचार्या विमलेश बंसल ने कहा कि महर्षि देव दयानंद सरस्वती वास्तव में योगियों में योगी, ऋषियों में ऋषि,संतों में संत,गुरुओं में गुरु,शिष्यों में शिष्य,तपस्वियों में तपस्वी,वैराग्यवानों में वैराग्य वान, ज्ञानियों में ज्ञानी इत्यादि विलक्षण प्रतिभाओं को लिए बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे।उनका पूरा जीवन हमारे लिए संजीवनी बूटी का काम करता है।दूसरे शब्दों में कहें तो महर्षि देव दयानंद सरस्वती का पूरा जीवन हमें ऐसे दिव्य चक्षु प्रदान करता है जिनको प्राप्त कर हम अपने जीवन को धन्य कर अन्यों के भी प्रेरक बन सकते हैं उनका व्यक्तित्व और कृतित्व चुंबकीय था। जिधर भी दृष्टि जाती उधर की ही धारा बदल जाती।जिसने भी एक बार उन्हें देखा सुना उनका दीवाना हो गया।चाहे गुरुदत्त हो या मुंशीराम या फिर अमीचंद मेहता न जाने कितनों का भी जीवन हीरा बन गया। इसके लिए उन्होंने न जाने कितने पत्थर खाए विष पिया किंतु समस्त मानव जाति को अमृत पिलाया। जिधर भी मुड़े उधर से ही ढोंग पाखंड अंधविश्वास कुरीतियां रूढ़ियां छुआछूत मिटता चला गया। न आंधी देखी न तूफान सबको चीरता हुआ एकमेव लक्ष्य–सत्य की खोज कर ईश्वर की ओर बढ़ते और बढ़ाते चले गए।सत्य में जिए,सत्य ही परोसा,सत्य के ही प्रेरक बन सत्य में मिल गए।जन्मोत्सव और बोधोत्सव दोनों ही नजदीक हैं उनकी समस्त कृतियों–अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि,ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि बहुमूल्य पुस्तकों से अपने जीवन को रंग अन्यों के कल्याणार्थ आर्ष वैदिक पुस्तकें वितरित करते हुए सच्चे रूप में श्रद्धा सुमन अर्पित करने चाहिएं। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री सुनीता रसोत्रा व अध्यक्ष शशि चोपड़ा ने भी अपने विचार रखे।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों को जीवन में अपनाने का आह्वान किया।प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

(पृष्ठ 2 का शेष)

से खाते हैं तथा विश्व बन्धुत्व का प्रचार करने सहित सभी मनुष्यों को परमात्मा की सन्तान बताते हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने उपदेशों व ग्रन्थों के द्वारा जिस सत्य सनातन तर्क–सिद्ध व सर्वहितकारी वैदिक धर्म का प्रचार किया वही धर्म एवं संस्कृति विश्व के प्रत्येक मनुष्य का वस्तुतः सत्य व यथार्थ धर्म एवं संस्कृति है। संसार को इसको अपनाना ही होगा। अन्य कोई धर्म व जीवन शैली वैदिक जीवन के समान सर्वथा निर्दोष व सर्वहितकारिणी नहीं हो सकती। ऋषि दयनन्द ने शुद्ध हृदय एवं भावनाओं से संसार से अविद्या दूर करने के लिये सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित जिस वैदिक मत का प्रचार किया उसमें वह सफल हुए हैं। वैचारिक धरातल पर ऋषि दयानन्द के अधिकांश विचारों को पूरे विश्व में स्वीकृति मिल चुकी है। कोई इनको चुनौती नहीं देता। मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, दैनिक सन्ध्या, एवं यज्ञ आदि को भी कुछ समय बाद स्वीकृति अवश्य मिलेगी। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 9412985121

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के 94वें बलिदान दिवस पर

संगीत संध्या : एक शाम शहीदों के नाम

रविवार, 23 मार्च 2025, शाम 4:30 से 7:30 बजे तक

आर्य समाज आनन्द विहार डी-ब्लाक दिल्ली-110092 (निकट मैट्रो स्टेशन कड़कड़डुमा)

मुख्य अतिथि: श्री हर्ष मलहोत्रा (केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार) **अध्यक्षता- श्री अशोक जेठी** (चैयरमैन मदर ग्लोबल स्कूल)

विशिष्ट अतिथि - श्री ओमप्रकाश शर्मा (विधायक) **, डॉ. मोनिका पंत** (निगम पार्षद)

गायक कलाकार- श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' व प्रवीन आर्या 'पिंकी'

गरिमामयी उपस्थिति: श्री सुरेन्द्र गम्भीर, श्रीमती नीता जेठी, माता सुशीला गम्भीर, श्री महेश शर्मा, श्रीमती नरेश ढींगरा, श्री राजकुमार भंडारी, श्रीमती राजकुमारी शर्मा, श्री पीयूश शर्मा, श्री सुनील भाटिया, श्रीमती वन्दना शर्मा, श्री विवेक आहुजा, श्रीमती विजयारानी शर्मा, श्री जगदीश पाहुजा, श्री वीरेन्द्र महाजन, श्री अरुण विनायक, श्रीमती अर्चना मोहन, श्रीमती ममता चौहान, आचार्य देवेन्द्र शास्त्री, श्री अजय चौधारी, श्री अशोक गुप्ता, श्री विकास शर्मा, कै. अशोक गुलाटी, श्रीमती गायत्री मीना, श्री मुक्तिकांत महापात्रा, कर्नल अमरेश त्यागी, श्रीमती रजनी गर्ग, श्रीमती मधु सिंह, श्रीमती सुमन गुप्ता, श्री अंगद सिंह आर्य, श्रीमती सोनिया संजू, श्री एस.पी. अरोड़ा, श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री रवि बहल, श्री पतराम त्यागी, श्री ओमप्रकाश मलिक, श्री मनुदेव आर्य, श्री महेश भार्गव, डॉ. डी.के गर्ग, श्री यशोवीर आर्य, श्री सलिल मेहता, डॉ. अजय बेदी, श्री अनिल आर्य, श्रीमती शशि खुल्लर, श्री संजय आर्य, श्रीमती निशु अरोड़ा, श्री देवेन्द्र गुप्ता, श्री प्रदीप गुप्ता, श्री सुभाष ढींगरा, श्री देवेन्द्र भगत, श्री अरुण आर्य, श्री कृज्णकुमार यादव, श्री देवेन्द्र आर्य बन्धु, श्री सुरेश आर्य, श्री ईश नारंग, श्री अनिल मेहता, श्री राजीव कोहली, श्री ऋषिपाल खोखर

ऋषि लंगर रात्रि 7.30 बजे, आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक: अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष 9810117464), **महेन्द्र भाई** (महामंत्री 9013137070), **विनोद खुल्लर** (प्रधान आर्य समाज, 9958311876) **दीपक वर्मा,** (मंत्री आर्य समाज, 9810366663), **दिनेश सेठ** (कोषाध्यक्ष, 9868128539), **रामकुमार आर्य** (प्रदेश अध्यक्ष), **वेदप्रकाश आर्य** (मंडल अध्यक्ष), **प्रवीन आर्य** (राष्ट्रीय मंत्री), **सौरभ गुप्ता** (संगठन मंत्री), **विकास गोगिया** (स्वागताध्यक्ष)

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् व आर्य समाज श्रीनिवासपुरी के संयुक्त तत्वाधान में

होली मंगल मिलन व राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

शुक्रवार 14 मार्च 2025, सायं 4.00 से 7.00 बजे तक

स्थान : आर्य समाज श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली–110065

आमंत्रित कवि:

प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी (राष्ट्रीय कवि), **श्री कृष्ण गोपाल विद्यार्थी, पिंकी आर्या**

मुख्य अतिथि: श्री रामबीर सिंह विधूड़ी (सांसद), **श्री प्रवीन खंडेलवाल** (सांसद), **श्री आनन्द चौहान जी**

अध्यक्षता: श्री आर्य रविदेव गुप्त (प्रधान, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल)

गरिमामयी उपस्थिति: सर्वश्री अजय चौहान, ठाकुर विक्रम सिंह, के.एल. पुरी, राजेश मेहन्दीरत्ता, सुरेन्द्र शास्त्री, रविन्द्र आर्य, जितेन्द्र डावर, ओमप्रकाश छाबड़ा, नरेन्द्र नारंग, अविनाश धीर, रमेश गाडी, आदर्श सलूजा, राजेन्द्र वर्मा, अरूण बहल, आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र, सहदेव नागिया, सुरेन्द्र गुप्ता, वेद खट्टर, मंजीत सिंह आर्य, एच.एन. मिथरानी, प्रमोद पाठक, राजेन्द्र आर्य, देवदत्त आर्य, गजेन्द्र चौहान, स्वदेश शर्मा, रामबाबू गुप्ता, महेन्द्र जेटली, राधा भारद्वाज, प. मेघश्याम वेदालंकार, भूमेश गोड़, यज्ञवीर चौहान, सुशील आर्य, बलराज सेजवाल, संध्या बजाज, योगराज अरोड़ा, मनमोहन सपरा, डॉ. वीना सबरवाल, अजय खट्टर, सोनिया संजू, वीरेंद्र सूद, बलजीत आदित्य, श्यामलाल आर्य, श्रीकांत शास्त्री, सुरेश आर्य, डॉ. रत्न कुमार लूथरा, तेजभान दिवान, राजबीर चौधरी, विपिन डावर

आमन्त्रित आर्य नेता: सर्वश्रीमती शोभा सेतिया, सूर्यपाल आर्य, नवीन रहेजा, डॉ. सुनील रहेजा, प्रि. अंजू महरोत्रा, सुनीता रसोत्रा, पूजा सलूजा, अर्चना पुष्करना, राकेश चोपड़ा, चतर सिंह नागर, देवेन्द्र सैनी, वेद प्रकाश विद्यार्थी, विजय मलिक, के.एल. राणा, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, विजय कपूर, अतुल सहगल, विद्योतमा झा, ऋचा गुप्ता, विद्याभूषण गुप्ता, विरेन्द्र ग्रोवर, प्रवीन रेलन, अजय कपूर, रविकान्ता अरोड़ा, रेणू चौधरी, महावीर सिंह आर्य, मास्टर हरिचन्द, ओम सपरा, भारतभूषण साहनी, विजय सबरवाल, अतुल अरोड़ा, संजीव सिक्का

जलपान रात्रि : 7:00 बजे, आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

दर्शनाभिलाषी: अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष), **महेन्द्र भाई** (राष्ट्रीय महामंत्री), **ओमप्रकाश वर्मा** (प्रधान समाज), **सुशील आर्य** (मन्त्री समाज), **विजय गाबा** (कोषाध्यक्ष समाज), **रामकुमार सिंह** (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), **दुर्गेश आर्य** (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), **देवेन्द्र भगत** (राष्ट्रीय मन्त्री), **प्रवीन आर्य** (राष्ट्रीय मन्त्री), **रामपाल खर्ब** (अध्यक्ष दक्षिण दिल्ली), **वेद प्रकाश आर्य** (राष्ट्रीय मन्त्री), **धर्मपाल आर्य** (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष), **सौरभ गुप्ता** (संगठन मन्त्री), **अरूण आर्य** (प्रदेश मन्त्री), **प्रकाशवीर शास्त्री** (मन्त्री दक्षिण दिल्ली)

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970